IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

दलित चेतना में होन वाले सामाजिक एवं राजनैतिक परिवर्तनों में मूल्यांकन

देवी सिंह
शोधार्थी हिन्दी विभाग

जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)

शोध सार

दलितों ने अपने आप को कमजोर और सशक्त की दो श्रेणियों में बांटा है। प्रत्येक दलित साहित्य की कृति का मूल्यांकन स्वयं उसी के द्वारा निर्मित निर्धारित या उपलब्ध कराये गये मानकों द्वारा उनका प्रयास किया गया है। जिससे दलित अपने जीवन को राजनैतिक एवं सामाजिक दृष्टि से अधिक सशक्त जागरूक एवं महत्वकांक्षी बना गये। जिसके ऊपर बहुत से दलित साहित्यकारों ने अपनी आत्मकथाओं के माध्य से राजनीतिक एवं सामाजिक परिवर्तन को व्यक्त किया है।

शोध प्रपत्र

हिंदी की इन दलित आत्मकथाओं नें उत्पीड़न की मर्मांतक पीड़ा से साहित्य के पाठक को अवगत कराया है। अपने अपने पिंजरे से लेकर मणिकर्णिका व गोबरहा तक दलित आत्मकथा लेखन ने लंबी यात्रा तय की है। उल्लेखनीय है कि भदेसावन के आरोपों का सुर मणिकर्णिका तक आकर बदल गया है। स्वयं इन आत्मकथाओं का भी आक्रोश, प्रतिशोधपूर्ण आक्रामक स्वर आगे चलकर गंभीर और निष्पक्ष हुआ है। ''यह दलित आत्मकथा का स्वस्थ विकास दर्शाता है। इन आत्मकथाओं ने दलित जीवन की मूलभूत समस्याओं को भली भाँति उजागर किया है। उत्पीड़न, शोषण, गरीब, अशिक्षा, जातिभेद,

अस्पृश्यता, अंधविश्वास, कुप्रथा, पिछड़ापन, अज्ञानता, आंतरिक, जातिवाद आदि ऐसी प्रमुख समस्याएँ हैं, जो हमें लगभग सभी आत्मकथाओं में समान रूप से दिखायी देती हैं। ये आत्मकथाएँ सामाजिक विषमता विसंगति के साथ व्यक्ति की उत्कृष्ट जिजीविषा को भी सामने लाती है।''[1]

दलित आत्मकथाकारों ने सामाजिक उत्पीड़न को बड़े पीड़ामय व्यक्त किया है। जैसे– मोहनदास नैमिशराय, तुलसीराम, कौशल्या बैसंत्री, सुशीला टाकभौरे, स्वराज सिंह बैचेन, ओमप्रकाश वाल्मीकि एवं भगवानदास वाल्मीकि ने उत्पीड़न शोषण गरीबी अशिक्षा एवं अस्पृश्यता को दर्शाया है।

''दलित आत्मकथाएँ केवल व्यक्तिगत जीवन की त्रासदी भर नहीं हैं, ये सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश की कूरता पर प्रश्न चिन्ह है, यह अभिजात्य या कुलीन मानसिकता द्वारा उत्पन्न अमानवीय परिस्थितियों का आख्यान है तथा उसकी क्रूर निष्ठुर हो चुकी संवेदनाओं को झकझोरने का प्रयत्न है। यह राजनीतिक शक्तियों को दिया जाने वाला मानवीय एजेंडा है तो साथ ही साहित्य की कलात्मकता में दलित के प्रति सोई हुई संवेदनशीलता को जगाने का प्रयास भी है।''[2]

सुशीला टाकभौरे अपने कथा साहित्य के द्वारा सामाजिकता एवं राजनैतिकता में बहुत से परिवर्तन देखे जिनका संबंध वर्ण व्यवस्था एवं वर्ग व्यवस्था को समाप्त करना है। साहित्यकार अपने लेखन कार्य के द्वारा समाज को जागृत करता है एवं जिससे उसकी ज्वलंत समस्याओं का समाधान हो सके। लेखिका समता स्वतंत्रता के प्रति अधिक विचारवान है। जातिवादी विचारों को समाप्त करना चाहती है। वर्तमान समय में आज की दलित कविता में कई प्रकार की सामाजिक क्रांति है।

''समय–समय पर अनेक प्रकार की क्रांतियाँ हुई हैं, जिन्हें हम राजनैतिक क्रांति, धार्मिक क्रांति, औद्योगिक क्रांति, सामाजिक क्रांति आदि के रूप में देखते आए हैं। क्रांति किसी भी प्रकार की हो, उसका प्रभाव समाज पर ही पड़ता है। इस दृष्टि से सामाजिक क्रांति का सबसे अधिक महत्व है।''[3]

दलित साहित्यकारों की वेदना, संवेदना एवं पीड़ाओं का दस्तावेज है। दलित साहित्यकारों ने अपनी जाति के घेरे में बंधी सामाजिकता भोगी हुई पीड़ाओं का उल्लेख अपनी रचनाआं में किया है। मराठी लेखक ने महार समाज का, कबीर, रैदास ने रैदास समाज की पीड़ा एवं वेदना का चित्रण किया है। इसी विचारधारा को डॉ. भोमराव अंबेडकर ने आगे बढ़ाया है। जिससे समाज में नया परिवर्तन आया और आगे लोग चेतन्य जागृत प्रगतिशील बने। इसी क्रम में हिंदी साहित्य में सुशीला टाकभौरे वाल्मीकि समाज को अपनी रचनाओं के द्वारा समाज को चेतन्य और उत्थानमय बनाने का प्रयास किया है।

''हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचंद का पदार्पण एक अभूतपूर्व घटना है। पंडित बनारसी दास चतुर्वेदी ने लिखा है प्रेमचंद अपने समय के एक मात्र ऐसे साहित्यकार थे, जिनके कारण हिंदी साहित्य देश की सीमाएँ लाँघकर विदेशों तक जा पहुँचा और यह सच भी है। प्रेमचंद साहित्य का अनुवाद दुनिया की लगभग हर भाषा में हो चुका है। हिंदी कथा साहित्य के प्रेमचंद ही ऐसे कथाकार हैं। जिन्होंने पहली बार भारतीय (हिंदू) समाज में नर्क भोंगते दलित को अपनी कहानियों का विषय बनाया, उसकी संपूर्ण यातनाओं के साथ।''[4]

दलितों की सामाजिक एवं राजनीतिक विषमता को आजादी के पूर्व की दशा को प्रेमचंद ने व्यक्त किया है। लोग किस प्रकार से रूढ़िवादी मान्यताओं को अधिक वरीयता देते हैं। उस में प्रमुख रूप से खान–पान संबंधी नियम शादी का संबंध तथा धार्मिक उत्सव प्रमुख थे। परंतु धीरे–धीरे समय के अनुसार बदलाव आया है।

''खानपान संबंधी नियम, शादी का संबंध धार्मिक उत्सव। अछूत के साथ बैठकर भोजन करना तो दूर की बात है, उसके छूने मात्र से सवर्ण हिंदू शरीर को अशुद्ध हुआ मानते हैं। मंदिर प्रवेश तथा धार्मिक उत्सवों में अछूत का सहयोग तो दूर, वह मंदिर में रखी हुई मूर्ति का दर्शन भी नहीं कर सकता है। प्रेमचंद ने इन तीनों रूढ़िवादी मान्यताओं के प्रति विद्रोह किया है। जिसका प्रमाण उनकी ठाकुर का कुआँ, घास वाली, दूध का दाम, सद्‌गति, मंदिर, मंत्र तथा, बाबा का भोग, आदि कहानियाँ है।''[5]

सुशीला टाकभौरे अपनी रचनाओं में स्वभाविक एवं व्यवहारिक जीवन को अधिक उद्वेलित बनाया। जिसमें सामाजिक एवं राजनैतिक बहुत से मानसिक यातना और शोषण भी हैं। ''कभी–कभी अपने ही लोग हमारे सम्मान और प्रतिष्ठा को जानबूझकर धूमिल करते हैं। जानबूझकर हमारे नाम का सम्मान पाने के लिए वे हमारा अपमान करवाते हैं। कमाठी के पोरवाल कॉलेज में मैं प्राध्यापिका हूँ, कामठी के बच्चों को पढ़ाती हूँ। कामठी में हमारे कुछ रिश्तेदार कामठी नगर परिषद में चतुर्थ श्रेणी की नौकरी करते हैं। वे रिश्तेदार अपना काम करते हुये, कामठी निवासो सवर्णों को यह अक्सर बताते हैं– पोरवाल कॉलेज में जो टाकभौरे मैडम हैं, वह हमारी रिश्तेदार है, हम भी तो टाकभौरे हैं।''[6]

सुशीला टाकभौरे ने अपने कथा साहित्य में समाज और राजनैतिक विचारों को विकेंद्रित किया है। उन्होंने कहानियों उपन्यासों एवं नाटकों के द्वारा विभिन्न प्रकार के विचार एवं संरचनाओं को देखा परखा एवं मूल्यांकन किया। वर्तमान की समस्या एवं अतीत की समस्याओं में कितना अंतर है। राजनैति को समता एवं समानता की श्रेणी में लाने का प्रयास किया है। जिससे लोग अधिक से अधिक लोग अपने जीवन को यथार्थवादी बनाये तभी जीवन कसौटियों पर खरा उतर सकता है।

सुशीला टाकभौरे अपनी वैचारिक पृष्ठभूमि के द्वारा नई उपलब्धियां एवं विचारधारा को अधिक सादगी पूर्ण बनाया, जिससे जीवन की विषमताओं को दर्शाया। समाज, साहित्य और राजनैतिक सशक्त बन सके। सुशीला टाकभौरे की रचनाओं में नया स्वरूप दिखलाई पड़ता है, जिसमें कई प्रकार के विमर्श अनुभूतियाँ हैं।

सन्दर्भ सूची

[1] जैन पुनीता, हिन्दी दलित आत्मकथाएँ एक मूल्यांकन, सामाजिक पेपर बैक्स–नई दिल्ली, संस्करण–2018, पृष्ठ–31

[2] जैन पुनीता, हिन्दी दलित आत्मकथाएँ एक मूल्यांकन, सामाजिक पेपर बैक्स–नई दिल्ली, संस्करण–2018, पृष्ठ–36, 37

[3] टाकभौरे सुशीला, हाशिए का विमर्श, नेहा प्रकाशन–दिल्ली, संस्करण–2015, पृष्ठ–71

[4] सिंह एन., दलित चिन्तन अनुभव और विचार, वाणी प्रकाशन–नयी दिल्ली, संस्करण–2015, पृष्ठ–37

[5] सिंह एन., दलित चिन्तन अनुभव और विचार, वाणी प्रकाशन–नयी दिल्ली, संस्करण–2015, पृष्ठ–59

[6] टाकभौरे सुशीला, शिंकजे का दर्द, वाणी प्रकाशन–नयी दिल्ली, संस्करण–2014, पृष्ठ–250